E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि पर एक अध्यय

कीरथ सिंह

शोधार्थी शिक्षाशास्त्र,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

Paper Rcevied date

05/06/2025

Paper date Publishing Date

10/06/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.15824817

IMPACT FACTOR
5.924

प्रस्तावना

शिक्षा वह प्रकाष हैं जिसके द्वारा बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता हैं। इससे वह समाज का एक उत्तरदायी घटक एवं राष्ट्र का प्रखर चरित्र संपन्न नागरिक बनकर समाज की सर्वांगिण उन्नति में आनी शक्ति का उत्तरोत्तर प्रयोग करने की भावना से ओत–प्रोत होकर संस्कृति तथा सभ्यता को पुर्नजीवित एवं पुर्नस्थापित करने के लिए प्रेरित हो जाता हैं।

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात् शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन कर उसे सभ्य सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है, यह कार्य मनुष्य के जन्म से प्रारंभ होता है और बालक प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा प्राप्त करके सुयोग्य नागरिक बनता है। किसी भी देश की प्रगति और समृद्धि उसके विज्ञान, गणित और तकनीकी के क्षेत्र के मापदण्ड से निर्धारित होती है। जो अपने युवाओं को दी जा रही शिक्षा का नतीजा है। विकसित देशों की उन्नति के लिए इस तथ्य ने पर्याप्त प्रमाण प्रस्तुत किए है।

शिक्षा व्यक्ति की संपूर्णता का परिमाप हैं यह व्यक्ति के चरित्र को उत्कृष्ट बनाती हैं। शिक्षा से ही व्यक्ति का चरित्र प्रखर बनता हैं। शिक्षा से ही व्यक्ति को सही रूप में देखा जाता हैं। शिक्षा से ही व्यक्ति सही रूप में चिंतन करना सीखता हैं। मानव शिक्षा के बगैर संपूर्णता की प्राप्ति नहीं कर सकता हैं। शिक्षा संपूर्ण रूप में षिक्षा र्थी एक पहुॅच इस हेतु षिक्षण का सही शिक्षा ा में क्रियान्वन होना आवष्यक हैं।

इस प्रकार शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया हैं। बालक प्रारंभ में माता–पिता व अन्य सदस्यों से सीखता हैं। घर से बाहर निकलने के पश्चात् वह विद्यालय खेल के मैदान तथा पड़ोस से नवीन अनुभव प्राप्त करने का परिणाम यह होता हैं, कि वह अपने वातावरण तथा जीवन में आने वाली नवीन परिस्थितियों से समायोजन करना सीख जाता हैं। इस प्रकार से शिक्षा का क्षेत्र व्यापक हैं।

बालकों के शैक्षिक उपलब्धि–

शैक्षिक उपलब्धि से आश्रय षिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त परिणामों से होता हैं। शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों द्वारा किये जाने वाले कक्षा कक्षों की क्रिया होती हैं। जो विद्यार्थी द्वारा पूरे सत्र में अधिगम की जाती हैं। शैक्षिक उपलब्धि को कक्षा कक्ष का वातावरण, पारिवारिक, आर्थिक स्तर, धार्मिक स्थिति, पारिवारिक, उत्कंठा, भय, माता–पिता का अपने बच्चों के प्रति व्यवहार, किषोरावस्था, बाल्यावस्था, आदि घटक प्रभावित करते हैं।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

शैक्षिक उपलब्धि वर्तमान सामाजिक, आर्थिक संदर्भ में सर्वोत्तम विषिष्ट एवं महत्वपूर्ण कारक हैं। स्पष्ट रूप से शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों की सभी उपलब्धियां को प्रभावित करती हैं तथा स्वयं भी उपलब्धियों से प्रभावित होती हैं।

शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ–

चार्ल्स ई. स्किनर के अनुसार–''षैक्षिक कार्य प्रक्रिया का अंतिम परिणाम ही शैक्षिक उपलब्धि हैं, जो विद्यार्थियों को कार्य के बारे में अंतिम जानकारी प्रदान करता हैं।''

शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थी द्वारा अधिगम किए गए एवं प्रयोग में लाये ज्ञान को मापने का सर्वोत्तम साधन हैं। शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर ही हम विद्यार्थियों के मध्य अंतर कर सकते हैं। कि यह बालक प्रतिभाषाली हैं, या सामान्य हैं, या पिछड़ा हैं। विद्यालय में विभिन्न कक्षाओं में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का मापन या मूल्यांकन करने के लिए कि छात्रों ने कहां तक सफलता या उपलब्धि प्राप्त की हैं। इसके लिए उपलब्धि परिक्षाऐं आयोजित की जाती हैं।

शिक्षा वह साधन है, जिससे बालक की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियो का विकास होता हैं। शिक्षा व्यक्ति के चरित्र को उत्कृष्ट बनाती हैं। यह व्यक्ति को सभ्य बनाती हैं। षिक्षा के द्वारा व्यक्ति सही रूप में चिंतन करना सिखता है तथा शिक्षा के बिना व्यक्ति संपूर्णता को प्राप्त नही कर सकता।

शिक्षा प्राप्त करते–करते बालक अपने घर से कुछ आदतें भी ग्रहण करता हैं। जिससे वहां बालक अनुशासन कार्यों को समय पर पूरा करना तथा व्यवहार करना सीखता हैं। अध्ययन आदत से बालक–बालिकाओं में शैक्षिक उपलब्धि का विकास होता हैं तथा वह शिक्षा एवं शैक्षिक आदते केवल माता–पिता से ही नहीं बल्कि अपने भाई व बहनों से भी सीखता हैं। जिसका सकारात्मक प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता हैं। घर के अन्य सदस्य भी बालकों की अध्ययन आदतों को विकसित करने में सहयोग देते हैं। जबकि बालक स्वयं अध्ययन आदत का विकास करके शैक्षिक उपलब्धि ग्रहण करने की कोषिष करने में समर्थ होने की चेष्टा करते हैं। जिसके कारण बालक अपने अध्ययन आदत, शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं।

विद्यार्थी चाहे विज्ञान या कला संकाय का हो दोनों ही विद्यार्थियों में अध्ययन आदतों का निर्माण उनके परिश्रम के द्वारा ही किया जाता हैं। जिनकी शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण भूमिका रहती हैं। दोनों ही प्रकार के विद्यार्थियों में अपनी अध्ययन आदत विकसित की जा सकती है। जिसका प्रभाव विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक पड़ता हैं। अतः माता–पिता, शिक्षक, अभिभावक का कर्तव्य हैं, कि वे बालकों में शैक्षिक उपलब्धि का स्तर उंचा उठाने के लिए उनमें अच्छी अध्ययन आदतों को विकास करें। अतः उक्त बातें अध्ययन की आवश्यकता को व्यक्त करता है। विभिन्न शोधकर्ताओं द्वारा जो अध्ययन किया गया हैं, उन ज्ञानकोषों की संक्षिप्त जानकारी देने का प्रयास किया गया हैं।

भारत में किए गए शोध अध्ययन–

- **रथ आर. (1955)** 'रथ आर.' ने विद्यालयीन छात्रों की अध्ययन आदतों का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया। निष्कर्ष छात्रों के अध्ययन आदत तथा शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण भूमिका पैदा करना पड़ता हैं। दोनों ही प्रकार से अध्ययन आदत तथा शैक्षिक उपलब्धि विकसित की जा सकती हैं जिसका प्रभाव बालक की शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक पड़ता हैं।
- **सक्सेना (1968)** 'सक्सेना' ने अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि में संबंध पर एक अध्ययन किया। निष्कर्ष अध्ययन आदतों और शैक्षिक उपलब्धि में कोई संबंध नहीं पाया गया।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

- **पटेल के. एवं वर्स ट्रेटन (1972)** 'पटेल के. एवं वर्स ट्रेटन' ने जेसूट स्कूल एवं महाविद्यालय के छात्रों की अध्ययन आदतों का अध्ययन किया। निष्कर्ष आधे से ज्यादा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उनकी अध्ययन आदतों के अनुरूप थी।
- **शाह एच. पी. (1978)** 'षाह एच. पी.' ने एस. पी. यू. केष जिले में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के बालकों की अध्ययन आदतों का अध्ययन किया। निष्कर्ष बालकों के निवास स्थान, उनके षिक्षा स्तर, उनकी उम्र तथा पारिवारिक स्थिति का प्रभाव उनकी अध्ययन आदतों पर पड़ता हैं।
- **कांतावाला, एन.एन.एस.पी.यू (1980)** 'कान्तावाला' ने माध्यमिक शालाओं के छात्रों की अध्ययन आदतों का अध्ययन किया। निष्कर्ष पढ़ने की आदत श्रेणी के स्तर पर आधारित हैं।अध्ययन आदत मापनी एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक संबंध, परिणाम मापनी द्वारा नहीं पहचाना गया। अध्ययन आदत और पढ़ने की आदत का धनात्मक सार्थक संबंध हैं।
- **जी. सी. पी. आई. ईलाहाबाद (1981)** जी.सी.पी.आई.' ने शोधकर्ता के अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अध्ययन किया। निष्कर्ष शोधकर्ता के अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई संबंध नहीं पाया गया।
- **एस. एल. चोपड़ा (1982)** चोपड़ा' ने छात्रों के अध्ययन आदत का मापन करने के लिए अध्ययन आदत मापनी का विकास किया।

इस शोध समस्या में उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धी का अध्ययन किया गया है। तथा इसमें यह देखा जायेगा कि उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धी का प्रभाव परिवेश के आधार पर पड़ता है अथवा नहीं। बच्चे अपनी सामाजिक बुद्धि का सही समय व स्थान पर प्रयोग करके अपनी सूझ–बूझ का परिचय देते हैं तथा अपनी सामाजिक बुद्धि के द्वारा बहुत जटिल कार्यों को भी सरलता से कर लेते हैं और अपने शैक्षिक उपलब्धी क्षेत्र या परिवेश में शैक्षिक उपलब्धी शैक्षिक उपलब्धी भी उचित प्रकार से कर पाते हैं, प्रस्तुत समस्या के अंतर्गत उच्चतर माध्यमिक के बच्चों की षैक्षिक उपलब्धी किस प्रकार की है और उसका प्रभाव परिवेश के आधार पर पड़ता है या नहीं इसका अध्ययन सुनियोजित रूप से किया गया है।

प्रस्तावित शोध समस्या जो कि उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धी का अध्ययन इसमें शोध की आवश्यकता एवं महत्व गहन रूप से है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले किशोर शहरी क्षेत्र के छात्र एवं छात्राऐं अपनी बुद्धि का उपयोग करके किस प्रकार अपने आपको समायोजित करते हैं व अपनी समस्या का हल ढूँढ़ लेते हैं एवं शैक्षिक उपलब्धी के द्वारा वह पर्यावरण की अपेक्षाओं तथा इन्हें पूर्ण करने के लिये प्रयास करते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श चयन में सम्भाव्य न्यादर्श विधि (यादृच्छिक विधि) का प्रयोग किया गया है। अध्ययन हेतु उच्चतर माध्यमिक के जिसमें शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के 300 छात्र एवं शोध अध्ययन के लिये शैक्षिक उपलब्धी का इस्तेमाल किया गया। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धी का अध्ययन एस के निगम द्वारा निर्मित मापनी का उपयोग करके किया गया। शैक्षिक उपलब्धी की विष्वसनीयता 0.88 है। तथा वैधता 0.67।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

तालिका क्रमांक–1

शैक्षिक उपलब्धी मापनी पर विद्यार्थियों के मध्यमान मानक विचलन तथा टी मान

शैक्षिक उपलब्धी मापनी	संख्या एन	मध्यमान एम	प्रमाणिक विचलन एसडी	डीएफ	टी मूल्य	परिणाम
शहरी क्षेत्र की छात्र	300	56.35	6.86	598	1.72	0.01 स्तर पर असार्थक
शहरी क्षेत्र की छात्राऐं	300	57.25	5.98			

*0.01 सार्थकता स्तर पर टी का सारणी मान = 2.58

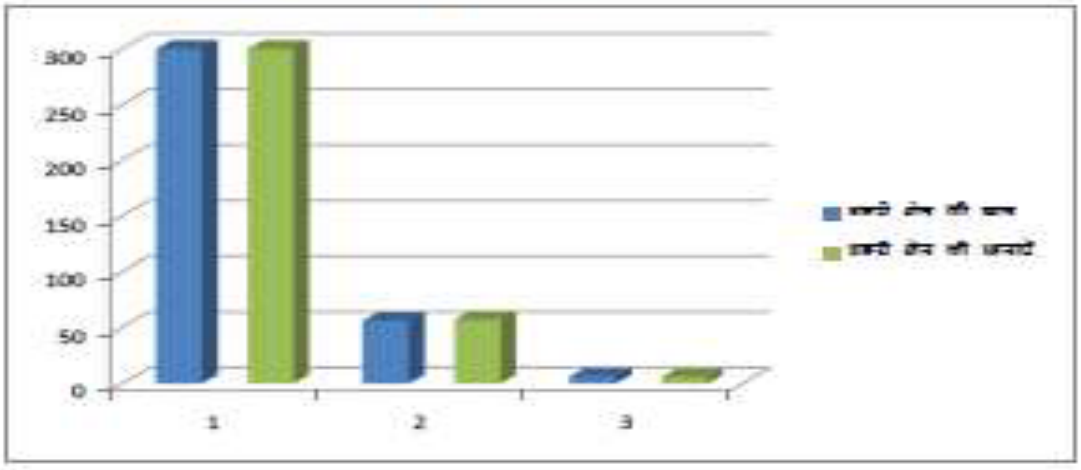

स्वतंत्र अंश 598, 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं।

उपरोक्त तालिका क्रमांक 1 में शैक्षिक उपलब्धी मापनी पर प्राप्त हायर सेकेण्डरी स्तर के 300 छात्र तथा 300 शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के प्रदत्तों का कुल का शैक्षिक उपलब्धी मध्यमान क्रमशः 56.35 व 57.25, प्रमाणिक विचलन क्रमशः 6.86 व 5.98 तथा उनके मध्य टी मूल्य 1.72 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता के स्तर कि= 598 पर सार्थकता के स्तर 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है अतः यह स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र के हायर सेकेण्डरी स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धी में सार्थक अंतर नहीं है। अतः हमारी यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

शैक्षिक उपलब्धी की मापनी परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है अतः यह स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी क्षेत्र के छात्रों एवं छात्राऐं के मध्यमान में सार्थक अंतर नहीं है अतः हमारी यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

परिवेश का छात्रों के समायोजन पर धनात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है, छात्र शहरी एवं छात्राऐं दोनों ही का शैक्षिक उपलब्धी बेहतर पाया जाता है। वे अपने क्षेत्र विशेष या आसपास के परिवेश में अपने आप को भलीभांति समायोजित कर सकते हैं।

भ्व$_8$ उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य जाति के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धी में सार्थक अंतर नहीं है।

उपर्युक्त परिकल्पना के सत्यापन के लिए हायर सेकेण्डरी के 300 शहरी क्षेत्र के छात्रों का तथा 300 शहरी क्षेत्र के छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धी परीक्षण के मूल्यांकन के पश्चात संकलित प्राप्तांकों को व्यवस्थित किया गया तत्पश्चात प्रत्येक वर्ग के प्रदत्तों का मध्यमान और प्रमाणिक विचलन ज्ञात कर दोनों प्रतिदर्शों के प्रदत्तों का सत्यापन टी मान ज्ञात कर किया गया है। विश्लेषण से प्राप्त परिणाम को तालिका 2 में दर्शाया गया है।

तालिका क्रमांक–2

शैक्षिक उपलब्धी मापनी पर शहरी छात्र एवं शहरी छात्राऐं के मध्यमान मानक विचलन तथा टी मान

टी मान

शैक्षिक उपलब्धी मापनी	संख्या एन	मध्यमान एम	प्रमाणिक विचलन एसडी	डीएफ	टी मूल्य	परिणाम
शहरी क्षेत्र की छात्र	300	56.35	6.86	598	1.72	0.01 स्तर पर असार्थक
शहरी क्षेत्र की छात्राऐं	300	57.25	5.98			

’0.01 सार्थकता स्तर पर टी का सारणी मान= 2.5

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

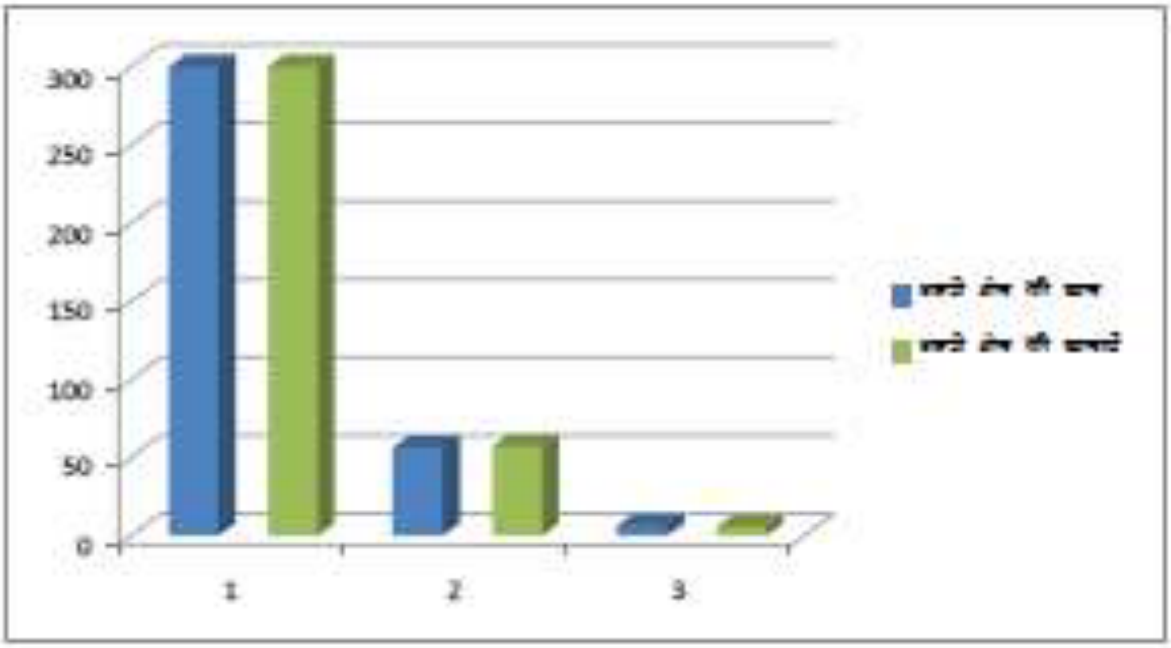

व्याख्या–

प्रतिपादित परिकल्पना 8 में शैक्षिक उपलब्धी मापनी की परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है अतः यह स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी क्षेत्र के छात्रों एवं शहरी क्षेत्र के छात्राओं के मध्यमान में सार्थक अंतर नहीं है अर्थात शहरी क्षेत्र के छात्रों एवं शहरी क्षेत्र के छात्रों के शैक्षिक उपलब्धी में सार्थक अंतर नहीं है। अतः हमारी यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

कारण– इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि परिवेश का छात्रों के शैक्षिक उपलब्धी पर धनात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है, चाहे सामान्य जाति का छात्र एवं छात्राऐं शहरी हों दोनों का ही शैक्षिक उपलब्धी बेहतर पाया जाता है। वे अपने क्षेत्र विशेष या आसपास के परिवेश में अपने आप को भलीभांति समायोजित कर सकते हैं।

शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष शैक्षिक उपलब्धी का संबंध घरेलू परिवेष एवं पर्यावरण से है। अधिकतर लोग शिक्षा के माध्यम से जीवन उपलब्धियों को प्राप्त करते है, जिससे जीवन व्यवस्थित बन सकें। शैक्षिक उपलब्धी विद्यार्थियों के एक विद्या अध्ययन के समय मौलिक परिणाम है।

संदर्भ सूची

1. **रथ आर. (1955)** 'रथ आर.' ने विद्यालयीन छात्रों की अध्ययन आदतों का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया।
2. **सक्सेना (1968)** 'सक्सेना' ने अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि में संबंध पर एक अध्ययन किया।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

3. **पटेल के. एवं वर्स ट्रेटन (1972)** 'पटेल के. एवं वर्स ट्रेटन' ने जेसूट स्कूल एवं महाविद्यालय के छात्रों की अध्ययन आदतों का अध्ययन किया।
4. **शाह एच. पी. (1978)** 'षाह एच. पी.' ने एस. पी. यू. केष जिले में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के बालकों की अध्ययन आदतों का अध्ययन किया।
5. **कांतावाला, एन.एन.एस.पी.यू (1980)** 'कान्तावाला' ने माध्यमिक शालाओं के छात्रों की अध्ययन आदतों का अध्ययन किया।
6. **जी. सी. पी. आई. ईलाहाबाद (1981)** जी.सी.पी.आई.' ने शोधकर्ता के अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अध्ययन किया।
7. **एस. एल. चोपड़ा (1982)** चोपड़ा' ने छात्रों के अध्ययन आदत का मापन करने के लिए अध्ययन आदत मापनी का विकास किया।